

१७ नमः श्रीयमाय ॥ वक्रसिद्धिसमाकीर्णं धर्मभक्तकविवर्तके ॥ एतद्वीरगणेश सर्वसहाकलालङ्कारे ॥ निवर्तितम
 हावक्या ॥ गरिदहाजमय ॥ महावन्दमहासुखगंगादाकिनियाचिन्ता ॥ वाक्प्राप्त्यामातयवाक्सी ॥ कर्ण ॥ गमरुत्रवायथ
 गहा ॥ भवदूकासिद्धा ॥ माहवक्रुडमलक ॥ श्रीनाथदिगन्त ॥ सर्ववीरनाथवता ॥ त्रैक ॥ सिद्धिनाथवधका ॥ धानुसं
 षिगकूलवृषीशा ॥ सर्वरूपाय त्रिखण्डसानन्दालासिमानसशा ॥ सामन्त्यस्त्रिदर्वयकृणकूलसुन्दरी ॥ १॥ ॥
 श्रीद्वयवाव ॥ सर्वधर्मात्तुर्वल्लान् त्वयसादाश्रुतमया ॥ यामलाश्रकपूर्वकुण्डलभक्तविभ्रतिया ॥ भिन्नकृदचवदूपा ॥
 महमकानवद्वर्क ॥ भलानकुचचिक्ताल ॥ सागवात्स्यमहासत ॥ चतुर्विभ्रतिवेतालका ॥ धूना ॥ सर्ववक्षत्रिता ॥ १०॥ दानि
 ससथाजाता ॥ तवेववचनायुता ॥ नकाधमययमाहाकी ॥ नदितीयाय प्रवृत्ती ॥ नकाहाकीर्महासाया ॥ विष्टव्याप्यववक्तिता ॥ न
 दिसव्यानवाकामुययासर्वेयवर्तता ॥ त्वयाकानदितीयासागकुलसहाश्रुवा ॥ १०॥ नवासर्व ॥ ययविष्टव्याप्यववक्तिता ॥ न

कपूजिता ॥ नतदेववचावाक्की षण्मायः कथं यथा ॥ षट्सिंहासनगमथाका दयः षट्नामिकाः स्मृता ॥ षण्मायवि
 रिन्नायका सायनमाकथं ॥ मृदिनावाथरिन्नावोच्च द्दमवजगसता कथमकापत्राहाकी विरिन्नायनमध्वना ॥ यः
 द्दसिंहासनगमदवी नायिका षट्पुकीर्तिता ॥ षण्मायविहिनाय किं ह्यरुदनामतया पूर्वसिंहासनादवी याम्यसिंहा
 नाधिना ॥ सिंहासनपद्विंशं सोम्यसिंहासनायना ॥ १५ ॥ सिंहासनमूढिगता क्वधः सिंहासनाकथा ॥ षट्सिंहासनं
 संस्तुता षण्मायगिर्तिता ॥ कथं सिंहासनं संस्तुता षण्मायदवता ॥ नकायवाविहिना किं षट्सिंहासनमाधि
 आयाहाकीयमका कथं षट्हाकिता गता ॥ यामायायकृतिस्त्रिधा चित्तिवृथनसंस्तुता ॥ विन्दुमालिनिवृयासा सर्व
 यायमवस्तुता ॥ नतत्तमरुतीहाकी निर्लुडं यत्रमध्वनी ॥ २० ॥ ददयर्गति सदृष्टं सर्वरूपयत्रमध्वना ॥ यशकायन
 माहाकिनायाः यकृतिग्रीध्वनी ॥ २१ ॥ किंथं कस्यनकार्थं षण्मायया कीर्तिता ॥ ये लाकनरुग्मध्वय समयापाल

मा ३

नायका ॥ २१ ॥ साधकैः पाथ्यतायित्वदस्वयनमध्वन ॥ ॥ श्रीसुदागिउवाचा ॥ मयि स्थितमदवी निष्णमयवदा
मिता ॥ गुह्यकृतमंदिरां सकथं कथयामि ॥ यवमहास्यवक्रमिन्द्रस्य कोलिकन्य ॥ ॐ नमस्तु स्यवक्रमिन्द्रस्य ॥
मायां जगन्मयी ॥ नाना यही महं यां प्रकृतिविश्वरूपिणी ॥ नकायनायनाभाक् प्रकृतिविश्वमाहिनी ॥ विश्वमाहनासा
ववेष्ट्वीति प्रकीर्तिता ॥ भवभ्रातृमित्रादौ पालनात्यत्रमध्वनी ॥ एलाकमाहनासाया स्वाहासात्यकृतिस्मृता ॥
गुह्यनायित्वं यस्या सुखवदमनेव न ॥ या विनायनमभ्यासि भव ॥ अश्विधायतस्य न न न व ॥ कानि विना
नायनमध्वन ॥ ॥ ॥ यनी भतीतियो प्रकृत्या सा कन विना ॥ दानुष्यवयथावद्वि मथनात् प्रकाशम ॥ माया
संप्रगृहीता वै सृष्टिस्तित्यनकुरुवत ॥ जीवहीनायथा दहस्यन्दिष्टं न व ॥ ३०४ ॥ भवके महीनता स
माधिः स हिता प्रिय ॥ मायाविनहितायो वत ॥ निष्णकालनिगीयत ॥ भववनिष्णलादति विन्दुमालिन्यस्य ॥

हात् ॥ मायया कवली कृत्वा निवर्त्तयति धीयते ॥ निवर्त्तयतीति समायागः सर्वजगदिदं सवत् ॥ चित्तिवृत्तं सा मा
 या विश्वं व्याप्य ददति ता ॥ अहं सदा निवर्त्तयति ॥ पुनर्निवर्त्तयति ॥ इत्युक्तं भलनाद्वी ॥ निवर्त्तयतीति गाय
 तं ॥ पुनर्लनाय सर्वेषां सत्ता नव कृपा कवत ॥ त्वद्विदिविष्णु माया नाना यलजगत्समय ॥ ३५ ॥ दवस्या
 नन्दनृपाहं जान देव सदा निवर्त्तयति ॥ पुनर्नवर्त्तयति दवा वली रुद्रिहना वली ॥ सुखि लिति श्वसीहान ॥ कल्य कः
 ल्य कर्त्तुं सवत् ॥ निवर्त्तयतीति त्वं विष्णु पश्य दिशं नव कृपा ॥ नयमी नयमी नयमी नयमी ॥ नयमी नयमी नयमी नयमी ॥ ४० ॥
 लिङ्गी किञ्चरु गत द्विद नयमी नयमी प्रजा ॥ मया सुखं सुखं ददा साधुताया ल तदनि ॥ साधुता लन तवृद्ध
 ॥ सर्वत दनू गत ॥ सुना ॥ ४१ ॥ का सायन माद वि विश्वं व्याप्य ददति ता ॥ वदु चित्ति तत्त्वं न वृत्ता लुप्तं गतं
 निव ॥ ४० ॥ ४१ ॥ यथिवी वायु नाका ग जल व ह्नि मथा वय ॥ धृत्वा स सुखं विष्णु कल्य कल्य य ॥ धृत्वा ॥ वृत्ता
 विष्णु म्य नृद्ध ॥ ४१ ॥ नयमी सदा निवर्त्तयति ॥ यव रुता त्वं कवली नयमी नयमी ॥ ४२ ॥ कृत्वा नथा यव रु

न नृपल सँकिता ॥ निहारी जीव नृपल, यंचरु नत्व मागन ॥ सिंहासन समाम्राय यंचरु ना नि संगन ॥
 आशा सायन मा ॥ श्री मल्ल कूल नरु ॥ वक्राधु व्यापिनी निशा यचं वक्रस्व नृपिणी ॥ वेडु विं न निरिक्त
 ने सर्व जीवस्व नृपिणी ॥ ५५ ॥ वक्रस्व नृपिणी साक्षात् स्त्री यं रुदन विद्यते ॥ लिलया कीउत निशा ललि
 ता नृप क्षत्रिणी ॥ अ नृप नृप बान् रुत्वा यं नृपं अर्थे नृपिणी ॥ कदाचि ज्ञी लया देवी माया नृपल कीउनि
 ॥ कदाचि द्वि नृपल निव नृपल स्वेक्य ॥ वक्र नृप धृता माया स्व नृप धृता यना ॥ उषा यना यना दवि
 प्रकृति विंध्य भादिनी ॥ पु वरु निवर्त्तमानं समयाया लना यक ॥ श्री नाथ क म सिद्धार्थ षठा म्राय त्व माग
 ना ॥ षट् सिंहासन याद ॥ श्री समा सँकथ या मित ॥ य नान न्द वने दवि निग्न मय शु व किं न ॥ सदा निवी हं य
 दकु ॥ समा विष्णु न मा हिता ॥ ५० ॥ त्वं तु काया सिनी रुत्वा मा मय कृत्य ददयं प्रथमं पूर्व वक्र न नृप नत्व
 नृप वच ॥ कथयामा सया विनु सिंहासन मका दन ॥ नायिका नृप न किं या निर्वन त्प नृप वच ॥ य ॥ ५१ ॥

महाभावाः पूर्वमायाप्रकीर्तिताः॥ वक्रं च यत्तु वक्राणि साधकानां हिताय वै॥ १३४॥ अथ ननु विल
मिष्येयं अथ नयायनमथवा॥ १३५॥ लनीतमस्युष्या दहादादेलु धाविता॥ १३६॥ वनालयकननम
सजिह्मलंकयान्तकी॥ उमनूवाकमालावहाकोयवकनाम्बु॥ १३७॥ १३८॥ कृवायवर्नवैवषमह
कसूक्ष्मजिनी॥ महाप्रतापवित्तकी॥ सूर्यचन्द्रासनल्लिनी॥ १३९॥ प्रयालीराजिनगवमूमुमाला
विरुषिता॥ वासुकीसखयालागाकक्षरुषयानागता॥ शूननैकालमालावहागालकावैरुषि
ता॥ विष्मलग्नयनगवचन्द्राद्वहनक्षयवा॥ १४०॥ १४१॥ प्रयापूष्पध्वनीदवीहाहानावनवप्रियापू
ष्पध्वनीतिविद्यातासाहकानानायाता॥ १४२॥ मिनीपूष्पलधयी॥ लकीवनममनकी॥
१४३॥ नानाधितानियावक्रवृथावताविता॥ १४४॥ पूर्वमायतिविद्यातापूर्वदवप्रयुजिता॥

सुखवाचसर्वविद्यानां महासाम्यहनातथा ॥ नानावृषध्वानित्या वदन्व्यावतानि स्त्री । जया जयति विजया
श्रुतिमानात्र सिद्धिका ॥ ५२ ॥ बाधुष्वनीकनालाव नाशभा सुवनस्वनी । नकदका विष्मलाक्षी कामभावा
सुमालिनी ॥ ५३ ॥ विष्मिकादामत्रभा नाटली नृत्तनायिका ॥ नन्दीवैव महाकाल रु । गीनीवकुलालिका
॥ ५४ ॥ नवनाटस्वनीतश्च वरु ४ यं वनसाविता । वदन्व्यावदवदती रेवती हकमाहका ॥ ५५ ॥ नाटस्व
वनि विख्याता रेवती स्वकुपालका ॥ ५६ ॥ विष्मिकावदक आगिनी मारुका हका ॥ ५७ ॥ बुक्ता यो ४ प्रपू
यक कुमात्री कामदा सदा । नृत्तमानयनादव रेवती मारुतिवृत्त ॥ ५८ ॥ नृत्तरेववनामा सु पूर्ववक्तव्यवलि
ना गाला ४ कुरुजा किन्ना गल्लस्य नृत्तमा ॥ ५९ ॥ वाममाग्न ४ समावाध नतद्विदित ४ क्रिया ॥
यदीदं कुमादोयं वदन्व्यावतदयं ॥ ६० ॥ वध्या कर्षकं रुतं सिद्धयस्तु निमादय । मनीविनासमाः

नाक्षत्राणां कायं च यदकं वा न ॥ १०४ ॥ शुक्लं स पूर्वमाय. प्राची सिंहासनं किं ना ॥ १०५ ॥ ॥ इति धीयू ॥ शुक्ल
 नी पूर्वोय ॥ ॥ दक्षिणमाय वक्रा मि महाभयं महालून ॥ शुद्धा नरे नवादि या. नि ४ ॥ शुक्ली च नि
 निना ॥ १०६ ॥ नीला लवण्य नी नित्या. शुद्धा नरे तच्चि वं विवृ ४ संहासनं गतानित्या. नि ४ ॥ शुक्ली न कः
 वचिक्ता ॥ १०७ ॥ वेत न्य रे नवी काली. उक् काली ति कवन ४ सुन्दरी कालिका कचि इदं यथैविकः
 वन ॥ १०८ ॥ क्षम न नृप नु वक्रा मि रे व द्या या विदू ४ दग्ध ॥ नित्या नीलम नि नता. नि ४ ॥ शुक्ली निग्न ॥
 श्रया ॥ कुन्दना नाभि ना दवी. धर्म ना जाय वेयू ना. संपदा यक्रम लेव. दवी वेत न्य रे नवी ॥ १०९ ॥ वड
 वेदासना दवी. महा रुक्ता न संकिता. प्रहल नी विना म ॥ दक्षिण दक्ष दाय ना ॥ ११० ॥ श्रुता न वक्र
 वद्यया. उम नी निवमालिका सायल कृष्ण ॥ १११ ॥ शुक्ल च मव ॥ विना ॥ ११२ ॥ आद्य यर्म कटि वता

ननवभारुनीयका। सहसादिहसंकाभं। नफकीवननीप्रसी॥१॥ यश्चैवकुवातिरीमा, त्रिपंचमयने
यूना। कोशिनयावहाद्याना, वन्दार्ककतलषमा॥२॥ ॐषडास्यललजिह्वा, निमनारीकलषदनी, विकला
लासनकाता, वक्रवकुसनहिता॥३॥ ॐदीरुयायहाद्याना, वन्दार्ककतना। नर्वद्वैत्रेभूककलीना
गनाजविनाजिना॥४॥ कवन्धडस्त्रीमयूना, बुक्कलीषमिमल। मयक्विन्नगलडक४मिशामालाविः
रुमिता॥५॥ तुजाधातुहासंयुका, गजकूजनकिंकिनी। याभं ककयालव, खर्वांगमलुल्लिठिमं॥ ख
रुटंवालधनू, श्वकदलुंकमलुल्लि। मूरयवनदंवेव, तर्कनीविधृताकने॥६॥ मूदितासिद्धिमधूना, म
किरि४यविवाविना। हूंदूंदूकावलादन, शासंयनूदवतागल॥७॥ वदस्यायत्रिसंहिता।
हाववृषमहादव, रुदधायत्रिसंहिता॥८॥ नि४धनीसामहायव, दक्षिणवानवर्हिता। अठानूअठ

शंदाहि याम्यसिद्धासनकिता ॥ ६६ ॥ तस्यांगदवता ॥ सर्वे वक्ररुदा महा लम्बा । ऊहिनी सुहिनी ता ना
 माहिनी श्रुधिनी शिवा ॥ ६७ ॥ मृत्पूजया च त्रिका च सिद्धी दक्षिण कालिका । प्रच ॥ ६८ ॥ व ॥ ६९ ॥
 ना ना कयालिनी ॥ ७० ॥ त्रिना द्विना शी च नभः वनप्रदयिनी । नीला सवस्वती नीमा ॥ ७१ ॥ क ॥ ७२ ॥
 श्वरी ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ कविजया वली नकचामुलिने नवि दक्षिण मायदेवि नाना रूपा विमात्रिणी ॥ ७५ ॥ वाक्का
 या हरे नवाष्ट केशपालाष्ट मवव । स्वकेश नार्थ वदुर्क ग ॥ ७६ ॥ सैथानिनी ग ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ का विशिन्न नृपासा सम
 यीया लनायक । श्रुधा नृमग ॥ ७९ ॥ सर्वे नाना कर्मरु लय दा ॥ ८० ॥ महा व ॥ ८१ ॥ दृ सैवा व ॥ ८२ ॥ पूनयनी दिगन्तना वै
 नाला वक्रला नृगु ॥ ८३ ॥ ऊहिनी ग ॥ ८४ ॥ लावलीला समायना नि ॥ ८५ ॥ व ॥ ८६ ॥ दृता ॥ ८७ ॥ द ॥ ८८ ॥ य ॥ ८९ ॥ क
 सर्वसाधक सिद्धिदा ॥ ९० ॥ सा कयूष नदी येषु साधका वैदद निनी ॥ ९१ ॥ वाहा नृग कनयी ॥ ९२ ॥ आनिमलु लमाग्ने ॥ ९३ ॥

वासावाचननायूया, कलिमायसिद्धिदा ॥ मृहीयतामयाधिका दक्षिणमायसंगतं ॥ १८ ॥ ॥ ॐ ॥
प्रायत्रातकुनि ४ ॥ गवनी दक्षिणमाय ॥ २ ॥ ॥ सिंहासनप्रतीशानु संक्षयं गृह्यार्चनी ॥ अनकगत
साहस्रप्रानाथनवतात्रिं ॥ ननु नानात्रदस्यं च जामलं लक्ष्मिनि ॥ स्वनाहिमथनादवी स्वकीयनसः
नायूना ॥ १०० ॥ ब्रह्मां गृहं न स्या जार्तं दिव्यं नथानिना ॥ नदानस्यमदं भति, कृत्वा दवीति विग्रहा ॥ ॥
हवालप्रदं न, कृत्वा का लो कयूजिता ॥ सधा जार्तमृशा गीता, यस्मिन्माययदवता ॥ कृत्वा कावगता माया
महासंज्ञाननूयिणी ॥ अनकदक्षिण ४ ॥ सधा, निर्यागिवसमागता ॥ अष्टवालप्रदं न, वदुमान्नेष्टवा
हिनी ॥ द्वाजिं गता रदयूका, कृत्वा कालेन वाहिता ॥ वृषसंक्षिप्तं दवं, स्ववर्त्तनूय (म) रिं ॥ ॥ एकवर्त्तं वि
ननु च, उजाह्लादमक्षत्रिं ॥ दमनूयं तु वार्त्तं च, स्वममं कृत्वा वदुर्व ॥ ॥ ॥ र्वं च वदुर्वार्त्तं च वदुर्वार्त्तं च दक्षिः

॥ वा भवद्वाम्भूतधनः कलकपालकं ॥ दंष्टाकपालवल्गुश्च मूलायनयनाशनं । यद्वनवर्धितं जानू-
वाभानूकायकृत्तिका ॥ एकवक्राणिभृगवश्च नूत्नवल्गुवर्त्तिता ॥ द्विष्टजावत्रदादवी, सिंहकारुचसथ
सूनामरत्रलख्वांगी, खन्देन्दुस्तमस्तका ॥ वर्वनाकगयाशनं वा नूयीनघनस्तनी । सर्वारुत्रलसंभ-
रालकनेष्टसंभरिता ॥ ११० ॥ पूर्वध्वाखाकृत्तिका माता, यद्विमाम्नायलेनवी । तद्वेववदूतदासि, कृत्ति-
काकूलमार्गम ॥ त्रिनिनासि सिद्धिनाथेन, धीनाथेनावतानिता । कर्मज्ञानाथवीथेन, कृत्तिकां मायय-
काणिता ॥ नवास्माधीनिर्माथ, स्वकुन्दलसिनेष्टव ॥ कर्मज्ञावलिख्वाव, चक्षुवक्षु कयालिका ॥ श्र-
नयूत्तकनालीव, कालामालिनीकामिनी, वाक्काशामातनगल, श्रुतिगमदिलेनवा ॥ वाक्कीमहेष्ट-
वीथेव, कोमानीवेष्टवीनथा । वावाहीवेवमाहन्दी, वामूत्तसफमीसृता । श्रुत्तमीचमहालक्ष्मी, एतांस

वैकुण्ठजिता। अस्मिता। नूनं ४८ ॥ ४८ ॥ धामा नरु कसुथ ॥ कया लिखि ४८ ॥ ४८ ॥ सदा न ४८ ॥ ४८ ॥ सदा
ना धययु आये, माह का सह स नवे ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ सौ वरु क ४८ ॥ ४८ ॥ आनिनी संघ क सु ना ॥ दो किनी रुत वेता ल ववि
का गल संवृता ॥ ४८ ॥ अ कि न्या दिम हा ना वा, वधा नि न्यः ४८ ॥ ४८ ॥ अ कि नी ना कि नी धा ना, ला कि नी का कि नी
नथ ॥ सा कि नी का कि नी धा का, या कि न्यः ४८ ॥ ४८ ॥ स कि ना द व ता यू का, व नूनं ४८ ॥ ४८ ॥ स धा
जा न ४८ ॥ सा धि ना सा, कू क्रि का व कु ना यि का ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ सा धि ना वि धा, द का य य ति धा दि ता ॥ ४८ ॥ न यू खा य व र ना
द ला न न न्य द्वा नू जा य थ ॥ पा थि वा ना व सो म्या ना, कू ल द वी ति की र्ति ता ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ अ न क सि दि दा स र्व, क या सु व ह
व ४८ ॥ ४८ ॥ दू र्वा सा ना धि ना वि धा, नि ना वा वा क ला धि ता ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ वाम मा र्ग न र ता नि त्या, द दि ४८ ॥ ४८ ॥ रु ल यू जि ता ॥ ४८ ॥
का न र्थ व के ४८ ॥ ४८ ॥ नान्य ध रु ल दा र व रू ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ सो वा वा न नि ना वा न, नि क्क लं का नि ना धु या ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ अ नि मा दि म हा

सिद्धि साधना क्रीडु सिद्धिना ॥ भा क्रदा शानदायवी, कृष्टिका कूलमाहका ॥ वक्रधनत्रालतादवि, तवा (य
 ग्रामनादिषू, मरुताने रवावास्ति, वरु विममनषुव ॥ १२५४ ॥ ॥ नूतिग्रा यवातनु यव्यिमसिदा मनः
 कृष्टिका ॥ ॥ ॥ वामदवागिता म्नाय, कथयामि तवायन ४। उग्र म्नाय मूलवनु, काली कूल समुद्रवा ॥
 काटिकाटिपुन दास्ति, कालिका नीवनायिका ॥ श्री सा सिद्धिपदायवी, विष्णु नञा यव दिना ॥ नावायणी मदा काली
 जगद्विना नयवा, कालिका लिमहा काली, वरु या गन्धनीतिव, तिष्ठनाम वयतिर्य, मृगमदशा रयानु
 ॥ श्रव कृष्णाववा नाव, कालेन कलयतिव ॥ १३० ॥ तं कालिकलय काली, तन ४ सा कालिका मृता ४ ॥ ग्रन कवक
 वकुलि, नाना रंदा मरुता ममा ४ ॥ ग कर्त कालिका दद्या, दवाव द्यायापिदि ॥ यथा विमम ममागनु, कुमात्रीक
 मममृ ॥ नीलवर्णा मरुता काली, विमृ खानव लावना ॥ यो ० दु दक्षिण वकु, मूलनवाव कायमी ॥ १३३ ॥ मृगुल

विननंशव, मूषवास्कीननूधना। विमलाईरुनाटाय, वल्लुईकन (म) वना ॥ १३४ ॥ सफविमतिमूलुय, नक
विप्रुषसंयुता ॥ १३५ ॥ मूषिकुल (म) राद्या, मीलिकाया लमालिनी ॥ १३६ ॥ किंकिनीनोपुनावाव, वीनघंटाववा
रुमा ॥ १३७ ॥ निवधुनासमावृता, मूषव (म) निननिर्जना ॥ १३८ ॥ मूषायावकविप्रुष, नूड (म) वसदा निव ॥ १३९ ॥
नम्योमनकधूषं (म) तासायं वकालिका ॥ १४० ॥ वक्रदलुग किमूलं खद्वींमयधधनका ॥ १४१ ॥ नरुनी मूषवनिजिका
निवाधकाणिमावना ॥ १४२ ॥ वक्रयथासनादविद्यानान्नयथाधना ॥ १४३ ॥ वामदधकपालं वक्रकपूष्पलि (म) रा
न ॥ १४४ ॥ धनयकिणिमूलप्रमदं दकि (ल) कन ॥ १४५ ॥ वक्रवदकि (ल) कन मूषुर्गमूषुर्नतथा ॥ १४६ ॥ वामयार्जव
खद्वींम। मृगवालीवधविर्ण। विकलाकुलमधक आतिवृथावकवला ॥ १४७ ॥ निर्वीजयदतातीता, तावातीतामर्ण
वना ॥ १४८ ॥ मूषिन्मूलीमहादद्या नव क्रानिपूजयन् ॥ १४९ ॥ वक्रनिशदवृथाजिकालिकायामहध्वनी ॥ १५० ॥ यस्याप्रसाव

महुल, वलि, उनेव भक्त ॥ दूर्वा माना न दाया सा, वसिष्ठः कोलिक सथा । शिव उः पंचसका का, द का हा सिद्धि
मागता ॥ मूनि सा मा म हा सिद्धि, तत्त्वा भू सिद्धयः ४ स्मृता ॥ मा क दा सिद्धि दा कालि, निर्वोलाणी य न भव नी ॥ १५
॥ केवल्य भ का सिद्धि १ स्या न्न दा स्नान य का लिनी । सा ध का रे न दं सा का, ऊ ना म न ल व क्रि न ॥ ध न द स्य नः
सा रु ति, न ग क स्य य जा य त । बा रु ति सा ध क स्ये व, न व लु ला क दू र्त्त सा ॥ पं व द कु क मं द वी, पं व का ला
नू सा सि ता ॥ गु ष्ठ का ली म हा द वी, वै ष्ठ वी व ष्ठ नू पि नी ॥ वा म द व शि ता स र्व म हा रे न व का ट य १ ग ला
ग व दू था नि न्य १ ग न का टि स रु प्र की ॥ रु त व ना ल दा कि न्या, (व्य ट का न) क सा ख ग १ रु व वा का क गृ ३
दा न्य ड लू का ग नू दौ व का १ ११० ॥ गृ ग म ली की क टि मु ग म, ना ना नू या म हा व ला । श्रा म्ना य द्वा व द नी रु
ड रु व नु नि नू रु नी ॥ १११ ॥ ॥ मू नि य ना न नु ड लू वा म्ना य क म १ ॥ ॥ उ द्दि सि हा स नी व अ उ ला क

[illegible]

यत्राभक्तिं सुन्दरीति, त्रिपुत्रं भाति गीयते ॥ महाभाक्त्युदादवि, यत्र ब्रह्मसूत्रं विष्णुः ॥ वदन् श्रुदाविष्णुः साक्षी,
वदन् नृपायका गिनी ॥ कर्मभ्यत्री नृदभक्ति, पूर्ययी भवता त्रिणी ॥ वज्रं भावैकवी नित्या, कामनूपा नवा सिः
ता ॥ भक्तीभ्यत्री रुग्णं भाव जालन्धनयति स्मिता ॥ वक्रभक्ती समूहा स, यी ० गहन विग्रहा ॥ उद्यानयी ० निः
सया, यत्र वक्रास्मिता का निवा ॥ सर्ववक्रभ्यत्री सर्व, यी ० गी मनु विग्रहा ॥ १७५ ॥ सर्वमनुभ्यत्री सर्व, यद्वि
दिव्य विग्रहा ॥ वज्रं भावभ्यत्री नित्या, निरसा नियत्रिग्रहा ॥ नित्या भवति विद्याया नववक्रं यवस्मिता ॥ नवव
क्रभ्यत्री नित्या, नवकोष्ठा गतास्मिता ॥ १७६ ॥ उला कर्मादनवक्रं सर्वसाय विपुत्रकं ॥ सर्वसंकोरने वक्रं सर्वसा
राग्यदायकं ॥ सर्वार्थसाधनवक्रं, सर्वनदाकरयत्रं ॥ सर्वकामसदायकं, सर्वसिद्धिपदायकं ॥ सर्वानन्द
मयवक्रं, नवमं वक्रं यवस्मिता ॥ सर्वतदेन्दवलीना, गङ्गी वक्रमूदाहता ॥ १७७ ॥ त्रिपुत्रं त्रिपुत्रं भाव सुन्द

५

वीपूत्रवाहिनी। श्रीमालिनीवसिष्ठान्नाम ह्यष्टिपूत्ररत्नवी॥ अत्र कथयता वन्द्यनीनाथपूज्यसंस्क्रिता। वेन्द
ववदिकालावश्रुतनालकालक॥ दिदम्भप्रवसन्नमुनागयजुषसर्वत॥ यजुषाउगसंख्याते वहुः
प्रभुलस्युर्द॥ नकायूकं वहुद्विप्रते लाकनगुयावति। दिनधनजनेवातामसलोपदृथरुक्क॥ कोला
यसुखि सवापिदृष्टादृष्टलभसिध। सर्वनाथेषु सानतः॥ सर्वयक्षुष्यदीक्षित॥ १०५॥ सर्वद॥ सर्वविः
साक्षात् मरुध्वनसमानवत्॥ श्रीवर्ककात्रयितारुधीदद्यात्साधकायव॥ रुवर्कं ननदलं हि सल्लित
वनकानना॥ सर्वमहायासूयत॥ सर्ववैष्णवसरुम॥ सर्वदसर्वदजीवतुक्कलासेनीवे सुधी॥ महादाना
निर्भेदाका म्निरिहिवृक्षावादिशि॥ नरुलं सरुतनूनं शिवकस्यप्ररावत॥ काटिलिंगप्रतिष्ठस्य यत्
लंसमूदाहन॥ नरुलं सरुतनूनं श्रीवकस्यवपूजन। विष्णुकाटिप्रतिष्ठायां रुलं प्राप्तिनिष्ठितं॥ १०६॥

हिनयप्रजततामुमलोचयदृकतथा। अंकिताधनययमुचककं॥ १७॥ अथिवा॥ यानिकानिचपायालि
वक्रहत्यासमानिच। मयनसर्वपायस्य॥ अथवक्रस्यवधनयत॥ रूतयुतयिभयवययदेवक्रनाकि
सेदोकिनीभकिनीसर्ववीकिर्नुनेवभक्त॥ मदाकुरयदेवीयिजमस्तानलितायिवा॥ गमवधलन
गमावायि सर्वभुगैयदेवदत्त॥ अकालमृत्पुनरतिमदासनिदितायना। यनासनिदितायगुकि क
वक्रान्यदवना॥ १८॥ अथवक्रधनयित्वानुचक्रयामत्यत्रिखनन। कीटकेवानुनीकेवा निखिदक
भलपिवा॥ कृतावदियलीलनयायानिसूवदनययि। सकेवल्यनरुननयूननमरागवत॥ यम
दूनायनायकदकाधीवक्रधनयिवा॥ वक्रलाननवाभाक॥ काभ्यावायमननयन॥ अथवक्रधनयिवा
यि। अथभाकस्यकात्रली। सर्वदेवगलभक्तु सर्वधर्मयननुवे॥ गमयासत्रिगा॥ सर्वयुक्तनायागलाजिते

पूत्राहमसमृद्धाश्च केशाननवनादयः ॥ १० ॥ वाजिभक्षयज्ञस्य रुतं विदुर्लक्षवत् ॥ वामदक्षि
लयागनसूक्तविदिविधसूक्त ॥ सूक्तविदिविधवाका वामदक्षिणसामने ॥ सूविभक्षयज्ञस्य
॥ सर्वकामनसंय ॥ दक्षिणवात्रयागन किं दूष्मयत्रमासूक्त ॥ नदन्यावात्रयागन ॥ ११ ॥ ४ सि
द्धिरुर्लक्षन ॥ वद ॥ केदक्षिणवात्र ॥ केवलं केवलं रुतं ॥ सूतवमदादवी साक्षाद्वक्षस्ववृषि
णा ॥ गद्यवक्षस्ववृषिणा यत्र मध्यवी ॥ गद्यवक्षस्वविज्ञानादि साक्षाद्वक्षस्ववृषिणा ॥ १२ ॥
॥ गद्यवक्षस्वमदादवी वाचवृषिणा संस्मिता ॥ वृषीयासामदाविद्या साक्षाद्वक्षस्ववृषिणा ॥ वक्ष्मका
दिसद्वृषि जिज्ञाकादि नते वृषि ॥ वक्ष्मिद्वं नवमक्राति प्राविद्या वा ॥ गद्यवक्षस्ववृषि ॥ वक्ष्मविद्या स्ववृ
षासावृक्षिमुक्तिरुल्लसदा ॥ उकावात्रयागन नानुसूयस्य काटय ॥ वा ॥ गद्यवक्षस्वमदा विद्या ॥

ननु काश्च कदाचन । विना तु नृपुण्य दनं प्रविद्या धातुमश्नन् ॥ दत्ता पुत्राय यमु सरस्वतीया निनी गले ४
। श्रीगुप्ता ४ कथया दानं ननु काश्च कदाचन ॥ २०० ॥ विना तु नृपुण्य दनं न कथं नैव कदाचन । श्रीगुप्ता ४ कथ
या लब्ध्वा सर्वं भुञ्जदायिनी ॥ सुधनं न निनी वनं गच्छन्नु यदायिनी । सा राग्य राग्य सयना कः
ला कललदायिनी ॥ उवनं नृपुण्य राग्यं जे ला कल कर्वन् नथा । यत्र उक्तं लिनी न त्वं ददाति यदुक्तं
॥ धातुमश्नन् कदा विद्या तु किमस्ति रुतु यदा । नि ४ मनस्विमदा विद्या विस्तु लिङ्गमयथा प्रिय ॥ साकः
पुवि नृपुण्य विद्या दानं नानु यदायिनी । महासंयत्यदा विद्या साक्षा दनं नृपुण्य ॥ २०१ ॥ धातुमश्नन्
महाविद्या श्रीविद्या कथिता यूना ॥ निधीनान् कर्णं कार्यं श्रीनृपुण्य यथा प्रिय ॥ पुनः विक्रीया श्री
विद्या धातुमश्नन् ॥ नदया यत्नं कस्यापि दद्यात्तु यदायिनी ॥ नानु नानु यदायिनी प्राप्ता सावधिका

यत्र। सोवर्णं नाजर्णं ताम्रं। (धृ) मम मम धर्मः॥ तं धर्मं कुरु लया कं शोभं काटि गुणं जवत्॥ सोवर्णं
नक्त रुद्रं अथ सो किंपुत्री मिता॥ वा ला पुमा विद्या न ता वा (धृ) व वी मृता। सीप सुदा धी यदा ध
तस्तु विष्णु न नवी॥ २१०॥ विन्दु मा लिनि विस्त्रे खा रु ले खा धी यना क ला। षट्पु टा न व वृ टा व ला पा
मृडा ति कू ति का॥ यं व मी यं व का न्य म विद्या धी काम नाज कं धा उ म लू मि हा विद्या मा वे धी य न
मा य न॥ य ना यू का व पा ला द ४ ४ र व स मू दा ह तं। अ नि मा धा म हा सि दि व न्त ना य ४ पु की र्ति ना ४
॥ यं व सि हा स न ध धा म हा रि य न स न्द्र त्री। सा का ज्ञा य स नू या व वे षू वी य न ध व ता॥ स व सि नू पि
ली स ह्या पु कू ति ४ य न म ध वी। स व जी व स नू या व आ ल ली म स नू पि ला॥ २११॥ स व ति लि हं तु
रु ना अ नि त्रि य वि धी य न॥ सि हा स न स नू या या उ ह्वा ना य म या दि ता॥ ॥ ६० ति धी य ना न लू धी

विद्या उद्गोत्राय ॥ ॥ मूकमाय मूकमयत्वं सावनीजिनमालका। मूकमायकर्मलिमोक्षकलोभा
प्ररुलपदा॥ वीरुमानिनिनाटका निलम्बलनलपरा। मूकमायान्नमाला लिखिता सावनीजानि
नी॥ विवकात्रकवल्लव नृपयादागवातना। जिनगामलिनीवीत हाडा रुत्रलरुविता॥ मलुमाला
विरुतामी व्यालयक्षायवतिनी। व्यायवर्मास्वनादवी सिंहरुमालीरुनीजका॥ वीरुवनीवज्रपूवी
वज्रघटावनायिद्या। वज्रुजयनसंका वज्रलोदगिनानूहा॥ कलिकयालखद्वामि उमनूक्षधुनाकने
। सीगनाम् नूसाकात् कलोभाप्ररुलपदा॥ वीरुलपदानिना नानावर्गलपदा सीगनानूगमा
सर्वानानादसमाश्रिता॥ कालवर्कसंवनक्ष रुययावावरीनवी। यागमन्त्रनीकासीगमावनी
सीगमाश्रिताः॥ २२४॥ ॥ नूतिष्टामहा। नूतिमिवकुदकत्रवीनमहाया। गयनातनुकुमेदादमसाहसिक

92

नाथक ॥ १॥

आदय वाच ॥ देवदेव महादेव सर्वज्ञ यत्र भगवत् ॥ मूढा दुर्निर्दमन्त्र कालि क्रमसा इव ॥
 २२॥ मोनमय नतीव कामरूपमिजायत ॥ कथंम्याकालिका देवी नतकाटिपुशदतः ॥ च
 नहुदयुर्मकापि नमुनय नमः ॥ सर्वकालिका क्रमागित्यक्तिनेवलासतमनः ॥ वक्रध
 वीचक्रशदं कावसर्वाभिकाशिता ॥ क्रमददकूलाहं दं कथंयुजाक्रमयत् ॥ तस्यावृत्तनदवशः
 लशब्दाकिंमहा रुलं ॥ दंवा मूकं किंउकं साधकं यत्र भगवत् ॥ कथं काली जनलं वा सालं
 वा कालयत्तमना निरुत्तमिनि कलानित्या निर्वलति त्वयादिना ॥ २३० ॥ काटिशदलकं दं वक्र
 यदि नमः कन ॥ मूखमागन्तं नमः दशनायिका वदशंकन ॥ यस्यावृत्तनसकलं कालिका यजि
 नीरुवन् ॥ उक्तं वयना नित्या या देवी विविचिता ॥ सर्वज्ञा सर्ववित्तिन्या शिता यथा ॥

पश्चात्तु यं ४४ लीयतं हियतं पुनः ॥ ददददमहसान, नमस्तु ॥ ११ ॥ अना, सासीवकुल्यनः
 नित्या, का नूपाकतिर्दया ॥ अमृतं वया नन, यथा हत्यन्ति देवता। नायिकी क्रमशः दक्ष, धृत्वा
 रुष्या स्त्रियूक्तः ॥ २३५ ॥ वदय्य दानतं ददं, सर्वं सर्वं सर्वं ॥ २३५ ॥ ॥ श्रीसदाशिव उवा
 च ॥ वक्राङ्गु काटिलक्ष्मि, रुक्मसा कूलनं यया। तं कालं सननं, कालं सैकवली नमः ॥ यः
 स्यात्तु उधर्म शिल्प, वक्राङ्गु के लुकायनं। तं कालं सननं, कालं सैकवली नमः ॥ गृह्णन् देवी पव
 त्तामि, यस्तु यामनूयुक्तः ॥ उक्ते वयनां की वक्राङ्गु काटिलक्ष्मिनी ॥ नित्या निर्वर्जना देवी, वक्राङ्गु
 स्य ४४ काटिलक्ष्मिनी। वक्राङ्गु काटिलक्ष्मिनी, जिह्वा काटिलक्ष्मिनी नयि ॥ वल्लुङ्ग नैव गच्छति, गता देनायि सुन्दरी
 । यैव वक्राङ्गु न जिह्वा लिङ्ग यैव लिङ्ग यत्र मध्यवती ॥ २४० ॥ लक्ष्मि काटिलक्ष्मिनी दक्ष देवता मातृ वदामि ते। काः

लिका कुमरुदंष्ट्रया ललाटाभाकृदायिनी ॥ तानि न कथयिष्यामि कुमर्यं वविनिर्लूयं परं वक्रमः
मनिह्या साक्षात् सागुह्यं नृपिणी ॥ विश्वयानिर्गुणानिह्या गुलेः संकीर्तनं जगत् नयमानुष्ठीयः
साक्षात् नैश्वर्यं साक्षात् नव ॥ अथ कनूयपुत्रमा जगद्गुणगुलालया । पृथिवी वायुनाथाः
मिस्वयं रुनात्मसंमतान् ॥ तस्मात् नृपमिदं सर्वं सुखार्थं सुकृतं गुले । धनं लीयन्मादेवी धनं
दिनिवा नय ॥ २४३ ॥ पृथुत्वात् पृथिवीत्येका ननः सर्वं महाकुरुत । सर्वं जीवंपालयन्ती स
वृत्तवत्तलकमः ॥ समसर्वं जगत्प्राय गुले वीक्ष्य समर्थिनः ॥ वक्तुं विधिं जीवनाच्च जगत्त्वाव
वक्तुं मे मे ॥ जलेः सर्वं द्रव्यं सर्वं ननु हं सा जलं चिन्तय । ददयन्निर्जगत्सर्वं समं धर्मं धर्मं वव ॥
न जसाय लने व न जसायाः समाधिना । वायु कत्वात्महत्वाच्च निर्वैरात्वात् गुणगुणान् ॥ आर्क
भाक् चिन्ता देवा सर्वं सर्वं न गुणः ॥ महासीता ग्यजननी महासावस्वतः प्रदा ॥ २४० ॥ महा

सो न्यर्थं गुरुगण महा मृत्यु विना मिनी । वृक्ष विक्रम सुप्रदा दिर्वदिता या यहा विनी ॥ सर्वार्थ
 मयी देवी सर्व धर्म मयी मिवा । सर्व कर्म मयी पूज्य सर्व को र्थ प्राप्तिनी ॥ महा शो गयदा
 म्ना महा भा करु लयदा ॥ यस्या यहा वता देवी सर्व सुख तिना न्यथा ॥ वामा वात्र वता
 वापि दक्षिणा वात्र कुरु वेत् । निना वात्रा पि म्ना वात्रा या वा धर्मान विद्यते ॥ किमा वात्र वि
 वात्र लयदि का ल्या वृत्तं तथै ॥ किमा वात्र विवात्र लयदि का ल्या नदी किता ॥ २१ ॥
 निना वात्रा क्रिया सर्वा सा वात्रा क्रियते जया ॥ श्वकृत्त रक्त नियमा निना वात्रा सममृता ॥ का
 सिनामा कुरु यद्ये जगत्या यालिन म्ना ॥ महा यत क कोटी नीली लय व विन म्ना ॥ दक्ष
 त सर्व याया नि म्ना वा सि मि वा नल । वक्रा दा नै पव चा मि म्ना लूषक मला मि व ॥ विन्दु
 को लय वात्र न व को लय न लिखेत् । श्रुत्वा न वा द्य ल की दे म्ना द क र्ता ॥ धा उ म्ना द

१४

वसं लिख, मलु पाका वसं लिखे न। वउ४ वं व न के देवी, क व न य मू दा ह न॥ २५० X॥ नि भू ला
ग्रिमूलु माला वउ४ वं व न के पि थे। अरु दि कु भ म नार वि ल खं सु ख दा य के॥ क लि ना
मे द ग्ध स रं भू माला लू क र व वी। व का क ता ल व ल य क लि गं वा र भ म न के॥ वि ता र
दि कु य लि खे न, म हा पा न क ना न न, दि व ल य रा ज न वा पि। म नो वा वि व ट कि न। व न ना
गु न क य न, ना रि का भ मी व सि न्द्र ४॥ व क व न न यू क न, रु तु ना य व य सु धी॥ राज न
ल य थ ल न, लि खं द म न ला क था। म श व खं सु व खं न, व भ दि द धि म ना रु व॥ २५१ X॥
प ति मा या य ट वा पि, लु लं वू क के द दि। खं व वा थ नि भू ल वा, म हा पा न थ वा मि या
॥ न न न व सु व वू क, न व था नि य वा पि या॥ दि वा या व क व यो व, मं ग ला या ५ प वू ज थ न॥
ना भो य ल वू क, कालि का कू ल सो सि नी॥ कू ट कू प क ति स्ना म्या, ली ला उ व न वा व नी॥

वृह रुद त्रिधा क्ता, वल्काद पिम रुम नू, श्रु नू पा या नु व क्ता मि, नू य म य क नू पि ला ॥
वि ना क्ता नै न व वृ शा, सक ला य क ला स्मृ ना, त स्मा सा ध क सि ध्द थै, क्ता न था ग व दामि
त ॥ २१०५ ॥ पि ता म ह न द व न म सि मा ना ध या धि ना, उ ध न व म या या दा, उ क्ता ला
क स रू नै ॥ वृ क्ता पि सु ल म्मा थ, द रू का लि कू ल कू म, न न वि ध व स या दा, वि ध वा
ध न दा य य ॥ त ना लं का, वि धा ४ स द्वा, वं ध कालि कू मा नू ग्मा, द ध म स्य कू रू क रू
व, वि रू ष न म ह नु जि न, हि न य क मि यू व ल, व लि कू ल न्ध व क्ता, श्रु म्ब नी
थ मा न्धा ना, न कू धा रू ह यो द य ४ ॥ ना वा दा या मू लि न, दू वा सा ग्मा धि न न न ४ वि नू या
दा द य ४ सि द्धा न मि प्र स क्ता मू दा ॥ २११५ ॥ त स्या प्र सा द लं न, उ ला क्ता वि ज यी र
र व न, वृ क्ता पि सु रि त ४ प ध्म लं के न व व ध य य ॥ वि ध मि न व सि द्धा रू, ना य वा य

पुदलवान। सत्रयूतीत्रतीर्थेव दक्षिणादिगताकत्री॥ जिहताकृतिमक्रावेण लाकृष्टः
यदायिनीपदमवलम्बयामासीत्। तस्यैतायन्नतः पुनः॥ यदि पूर्ववद्वी मनुवेति
मताकत्री। याज्ञानातिसयुष्मात्मा रुद्रवाहनसंसेयः॥ मनुमानेति विख्याता। लाकृष्ट
यथायका। समस्तमनुजननी सर्वमनुष्यवृद्धिनी॥ २४०४॥ वक्रक्षवलिर्नमन्माता
सर्वपुदायिनी। यथैगिरामहाकाली। माकृष्टायायिनी॥ ननयासद्यः श्रीविद्या
विद्यतेऽवनादत्र। वायदाधनदाभाकृष्टायायिनी॥ तन्नामवनामनवावल्गुः
विनिपातिनः। नदायुति सादवी सूर्यवर्धनः। नृपश्वराणां वृत्तनवसंयुक्तः सर्वतस्यागमः
शिवा। आद्याकालीकर्मयंत्रकासायवधमना॥ कलीकूलसमूहः। पुलस्त्यनावनाविता। कृ
मानीविमूखाकाली नवजकाकृष्टाकिना॥ २४०५॥ आद्यायासृष्टिकालीवृद्धिनीयाकृतिकालिय

संहारकालिका उग्र, रुनीयादिद्युयिनी ॥ अनास्था कालिका देवी बहुधयवमाधिना। रावा
कालीयचमीरु अर्धवरावनासिना ॥ अरिन्नरूपास्त्रासबागुक्ककालीसुनोधिना ॥ अवीना
वयवावकुनदीना ॥ नादिके ॥ यवकालिमहायसा ॥ उकासातिन्नरूयिनी ॥ अस्मावेवः
वाहनागुक्ककालीयकीलिना ॥ नासाधनंयवक्रामि ॥ लूयायरयायहो ॥ अथवक्रमहाद
द्या ॥ अनयागमनूरुर्म ॥ २००४ ॥ थागविह्वानमागु ॥ साधकः सिद्धिनागुवन् ॥ नीलात्यलदः
लक्ष्मा नीलवत्तविनिर्मिता ॥ क्लानत्रभिक्कनाठाया ॥ आतिमिलुलसंरवा ॥ देवक्रामहाकाली
सकोविसेतिलावना ॥ अक्षरुवगनाध्व ॥ गुजादेलुन्ननाग ॥ दीपके उद्ध ॥ वलुयागव
नामना ॥ आतिमयमहा ॥ कुनिक्कलयददायिनी ॥ देवः ॥ सिंहवदनं ॥ एवमवर्त्तं ॥ सतास्वर्ग ॥ रु
वृवकुवनयधः ॥ कर्क ॥ लोक्कामर्ग ॥ कपीद्रव्यमूर्खवा ॥ भत्रकवर्त्तं ॥ महाल्वर्ग ॥ कालवकुंरः

१३

वदन् धूमवर्णं नयान् नर्कं । नार्कवर्कं च वामं च । विंगवर्णं सच चर्कं ॥ दक्षिणं मकरास्यं
च रुविना रंयु कीर्तिना । नयास्यं वामं कथं चर्कं । गोत्रवर्णं महा लवर्णं ॥ दयास्यं दक्षिणं का
ल्या ॥ मवर्णं विविक्तं यत् । सर्वदृष्टा कृता लाः । तिनगुली मनादिनी ॥ कुरंग कूटिला
ही मा कालास्या ग्राम् खारुमा विंगला दृष्टा टाय वदार्द्धं न ॥ नाना वर्णं व्ययः
टिना ॥ वन कथालि कीर्तिना । स का विंग नि मूलु व्य न क विष्णु सयुता ॥ ३०० ॥ वजा तिः
पूष्य सयुक्तं नि लामालाय कीर्तिना । विद्वत् वटिका कार्यं खरु योग्यं चर्कं ॥ खद्विगम
धुने चैव च कथं टा वसु खना । वालयनं चर्कं ॥ क का नल कूलं तथा ॥ सय्यं चर्कं कूटि
नी वं ही यत्त मंडा ठिका पुनः ॥ वनि जगत् चर्कं दलु चर्कं ॥ अवमस्या न के भानी ॥ वरु मूकं व
ठमन् विजनी वाम वा दूशिः ॥ विद्वत् वटिका कार्यं न रंयं चर्कं दलु चर्कं ॥ वल पुर्णं व कलः

लं, तिमूलं दृष्ट्वा नमः । यं ययम् ॥ धावा लं यय दीय मना कृमः ॥ कृन् कृया विजान
 ३३ कृत्रिका ताम्रं नथा । यय माला तिलु मय ३ गृध्रं ससि कवच नी ॥ कमलु लुधु वाः
 ॥ यय यय पूष्टि लया यद ॥ नद्या वरुं कृलु लं च मां यख लु स ॥ ३५ रुन ॥ वीज पुन रुले
 वी विजनी दक वा दृ रिषा या द्य व मय नी धाना काल वभा लनी यका ॥ किं किनी गाल
 ॥ मरा रूया वी वय लु निना दिनी । नो पुना वा वनि धो वा यय ना वा वनी य ॥ कनका मः
 दक युवा मेहा स्त्रि कन ॥ मरना । मूलु माला गल दं वा श्रया दा न्दा विल मिनी ॥ ३७० x ॥
 वक यय मयी माला शुक्का घालि का स ॥ कां वक द्वा त्र का यं टा कति वया वरा जिना ॥
 वक सुगी काल कं ॥ नु या गय द्वा रुनी यका । सी म्या ग्र रुष ले रू का ना गना जा यल कना
 ॥ नल कृलु लक ॥ मी यं वका ला सनं किना ॥ मिवा सनं न दृष्टव नी लं ना दा दं लां शीन ॥

११

महाद्यत्रतमांसं व कृष्ण वल्गुं वदुर्ध्वं । न क वकुं जिनयनं, शत्रवा रुत्रण निर्गं ॥ कल कपा
लरु सीव उम न स्व द्रा कृष्ण त्रिणी । नर्व र न व यी १ नु द वा आ स म रु मी ॥ यच्च य न कृ
न द धेः वृक्षा शायं व का न ल ॥ वा का विष्णु नू द ध्व ॥ १ ॥ य न व व स दा नि वः ॥ पी न ॥ य
मं न कृ धूमं ॥ य ना रा यं व का न ल ॥ द लुं व कुं ॥ की ॥ लुं स्व द्रां ग म यू ध धा व का ॥ न ऊ नी मू
स्वनी ॥ किं ता मि वा ध क्का नि ला व ना । पि न न का नि गु स्या दि रु का न व व री ष ॥ व रु ड क्का न
स्व स्य ॥ य द्र पृ ष्ठ नि वा ल मा ॥ भ वी य स्या दि न त्र ॥ दि ग व ल्गुं स व ल्गुं कौ ॥ १ ॥ १ ॥ यी ना रु व क
॥ व द्दि न कं स भ किं कौ । य मं रु ष्ठ व द लुं धूमं न म स्य ष क्कौ ॥ ३२० x ॥ व न लं या क रु
जाम्यं वा य ॥ म क न ध र्जा । कू व न कू क म ग दां ॥ कू मी ॥ न मूल कौ ॥ दि ग व ल्गुं य ट था ध य मा
स न य नि की लि तौ । १ ॥ कू क न यू ग थि कौ यी नं ॥ य ना यू ग म् न । दाय न वान व ल्गुं व ॥ मं व व कलिः

स्मृते ॥ अग्रे देवकृतवर्णं ययुर्पीनं सर्ववर्णवतः ॥ सामन्त्रकमिति ख्यातं कृष्णार्धवर्णं उच्यते ॥
 यवदन्तथावर्णं नवमासनमूयते ॥ सहस्रसूर्ये कालाय मासनेयविकीर्णं ॥ यद्वायविकि
 नादेवी नृत्यमाना सदादिता ॥ अथ वा सखमा ॥ सीमं सवदेवाधिर्वदिता ॥ सहस्रसूर्यप्रतिरीः
 दन्तिनी कूटनामया मालिनी जयमंगला ॥ मूककूटकायजिह्वाय लालाननं विचित्रयन ॥
 पुष्पालीरुय वायि नृत्यमाना पिवात्मनः ॥ सर्वमनुमयी धीना सवदेवकी जयभवती ॥ नववर्ण
 यामहाकाली मुहिन्ननवयोवना ॥ रासकिमस्य मधुसूता चक्री यत्र मधुवती ॥ यंत्रकाली पु
 रंदामु विष्णुर्गुरु यावती ॥ नववक्त्रा महाकाली सफाविंशतिलावना ॥ २३० ॥ ॥ उद्धृष्टा
 निर्मयं वक्त्रं वलुथा गध्वनी लिङ्गं ॥ विदलवटिका मूला मूलदेवा मुगवसा ॥ वक्त्रं कंठं नमूना
 ३३ विहीनार्थं वकालिका ॥ वक्त्रं सुरुजं माला मासना निकुमानिव ॥ रुषनी दीनिवर्णनि

यथा श्रीगुणकालिका। सुखितिवसं दानं अनायासं महेश्वरी॥ सा सा काल्या मुल्य नृपाः
 विष्णुर्ष सर्वं नृणां। विष्णुविका विष्णुधने नृदत्ता मित्रमनन॥ ३३४॥ ॥ नीलः
 जीमूतसंकाशो नृवदका महेश्वरी। पूर्वोक्तं धनं नाशुं तु ल्या वा न्या महेश्वरी॥ वदयन्मा
 सना देवी यो नानैयथा धनाः। जिह्वा ललाटे वा मण्डपं दर्शयन्तीं शिरसि का॥ मृदयुक्ता नदीः
 योक्ता धनं लावन नृत्यना। विदत्तवटिका ललाटे वदयन्तीं शिरसि का॥ नृणां योक्तिर्न व
 कं मुक्तिं कलनस्य रं। नृभिर्वा दणं संयुक्ता मना के सां सप्रसदा॥ संहारवक्रका संता नि
 मासा कोटिर्वा विक्ता। पत्न्या लीरुयदा देवी दत्ताष्टदृष्टिपुत्रिका॥ ललिता नाल लज्जिता मु
 क्तं कायं नाविनी। वदयन्तीं यन्त्रिंशु विनाशमज्जकं भवती॥ ३४०॥ दणं संक्रियं मायुक्ता
 विष्णुसंहारका विनी। हितिक्रमस्य मधुका ॐ पश्यन्तीं शिरसि का॥ स्वर्वालम्बा दनी देवी नाश

लीलासनसिन्हा ॥ अङ्गकक्षोपवित्त्यर्च्यं वक्त्रकं कावचवल्गुकी ॥ वादयन्तीमहाकाली, स्मितिका
धातुभासिका ॥ मुखिकमस्यमधस्तामस्यहासमन्विता ॥ उद्वसमयदायान् ललिता
ननुविग्रहा ॥ विहायवक्त्रवीणां विजतीवन्दतास्तथा ॥ थानियेवकम ॥ ध्वस्तं ध्वयसु
हकदतव ॥ ३४५ ॥ ॥ अनाख्यावकुम ॥ हासादवीजगमयी ॥ सर्वकालीमृगादे
वी धातुभासयनिहिता ॥ वन्दसूर्योपवित्त्यर्च्यो मीजीनदयधविनी ॥ उग्रासयनरा
साकोलविष्णुसमूहवा ॥ बालाकमान्नीयाकानी सर्वसंसृतवृषिणी ॥ निमृखाक्षुः
ज्ञादवीकपालमालसंयुता ॥ पिवन्तुनृषिर्न दिव्यं कृष्णवर्णं त्रिभावनं ॥ याभांकुम्भी
वक्त्रभूलं स्वर्दागं मूकनं तथा ॥ मृतबालं मलुदस्तं कपालं न कपूत्रितं ॥ चर्वक्षामहा
दवी नानासागरुसयदा ॥ ३४६ ॥ ॥ उतदवदिशायं यंचकालस्य कानर्षी ॥ नतः सम

७२

७२

सुतृपानि, कालिका कमंडलु वा ॥ विधिवत्पूजयन्निर्वा विधित्वा यानकात्रयम् । यथागुत्रापादि
ष्वनु, नदववगमाचनम् । देवतामनुतृपाली, गुत्रवचनसंभवेः ॥ शिवत्रुष्टे, गुत्रगाना, गुत्र
ष्टनकध्वनम् ॥ गुत्रवचसेदायुजा, कालिकाकुटिहंगवम् । अन्धनमसिसंमन्ने, गुत्रवचनवचनग
नि ॥ वत्सपूजसदृशेषूमातुः, चितुः, धर्मेष्टयि ॥ उन्मत्था, ग्नेत्रवत्तात्र, गुत्रविलसिधीयम् ॥
३१ गा, वत्सदृश्यादियायानां, निरुतिमसूडाहर्गम् । गुत्रादिहृत्तानां, निःकृतिमाक्षियाः
वर्गा ॥ गुत्राध्यदेवतायां, द्वेनरावर्नकात्रयम् । स्वात्मविक्रयथावापि, गुत्रवचवचपूजय
म् ॥ गुत्रुष्टुष्टुगकुष्टु, मित्याह्लापात्रमध्वनी । नेमात्तानपिनायुजा, जगतीवत्सूदन्त्रयम् ॥
गुत्रागुत्रनर्तद्वी, नकुयातिमिद्वधम् ॥ यस्ययसादाज्ञानीया, रुत्ताष्टसवनोद्वर्गम् ॥ नन्ना
षिन्ना, गुत्रध्वन, नस्यस्यानिर्दुलाक्रिया । यस्यवक्रादिनीयागा, दवीष्टमयीचनम् ॥ ३६० ॥

ननु नृवं वयं विष्णुः ॥ याः ॥ कलुगते न वि। दवतामनु सकलं लयितं न नरे न व ॥ गुनदेव
तमका लि मना गुदं न का न य न। शृद न निल यं यानि समूलं वि निरुक्ति व ॥ गुन संतो यथ
यनेः स्वयां ली ना वि भद्र या। दी पे क स्ये व ध ता ल य न। गति म वा द्य या न ॥ गुन संतो यन
न किं तु व न न र्थ ॥ ना नः य न न र्थ किं वि गु ना न र्थ वि कं वि थ ॥ अ ग नी नो व र्ण नू या व द्वा
लु आ वि जी भि व। पि लु दा ना दि सं स्का रं य थ पि भ न थ गु ना ॥ अ द्वा न न व कं या नि य दि व र्थ
भ ना धि कं। भ नी र्थ दा पि ना द वि द्वा न दा गु न व व ॥ गु ना मु न न र्थ ना नि सं सा रं दूः स्व सा ग न
। यस्य व क्ता दि नि र्था ना व र्ण व द्वा म र्थ व य ॥ ना न य ना र्थ द द्वा न न व की र्ण व ता क् र्द ॥ ३०१॥
अ ना र्थ सं य व द्वा नि सा रं स व र्थ का म दं। न का क नी न वा क नी भा उ भ क नी वा नू नी ॥ व द्वा र्थ
वा भ व र्ण व र्ण ना क नि वि र्ण व न ॥ दि भ ना क नि म नू र्थ द व ना क नी ना क नी ॥ स र्वा क

त्रिदशभिः प्रालम्बिताम्बु कालिका ॥ ३१० ॥ उच्चाव ॥ ॥ अमृतं यवर्तनं वदन्ति आचक्षते धनधानः
था । त्राविणी नाम सा विद्या भाद्रदा उक्तिदा विथ ॥ न का कृती यत्र विद्या शान्ता भाद्रदा सुता ।
मिव भक्ति समाया गम् रुवे दग्धवया वृत्ति ॥ महाकुलुल निदिदवी महावाव निवृत्ति ना । वदन्ति
निवाकना कश्चि कालं ववानृत्ति ॥ गी रवी वसधू हायुक्ती काली प्रालम्बिता दन । स्वर्ग माता
कमालिख्य महावेलु मना लिखेत् ॥ या गम्बरी यदंदा स्वा विधयं सानवा कृती । धा उ गम्बरी
विद्या विद्या प्रालम्बिता गम्बरी ॥ यस्या पदं गम्बरी मा गम्बरी वदन्ति रुया वकल्यते । विवदं तु समु
द्रस्य महावावर्तना लिखेत् ॥ निगमा माधवसंयुक्तां रुयं विदग्धवन्दिते । सत्या नृत्ति सा त्वनम्ब
उष्टिना कवली कर्तुं ॥ सत्यमत्या समा नृत्ति नृत्ति न कवली कर्तुं ॥ न नम्ब की जा ० नृत्ति ना ना य
लसमन्वितं ॥ माधवन मायुक्ती वलानृत्ति पूनन ॥

22

यत्थ कविधिना कुर्याद्यत्थ कुरु समभूतं ॥ १०० ॥ तिलिष्व द्विविधा दत्ति, सा तिलिका राजसक्त्या ॥ साः
तिका वलिना ख्याता, मांसरक्षादिवर्जिता ॥ १०१ ॥ राजसामांसनकादि, यूकं समभूतवृद्धे ॥ सधका नि
विधायाका, सा तिलिका राजसक्त्या ॥ १०२ ॥ तामसाभ्य तथ दत्ति, तर्खावका मि सन्दर्भा ॥ सा तिलिका सा
लिकेयका, लक्ष्मिपि सन्दर्भा ॥ १०३ ॥ सा तिलिका वलिदानादि, निर्यद्वयानुप्रयत्नतः ॥ राजसीना
जसमुत्तरे, यका निर्यदिनदिन ॥ १०४ ॥ राजसा वलिदानादि, सुवर्धन राजसेयुतः ॥ तामसकमसमुत्तरे,
वाषादि संयुतः प्रिय ॥ १०५ ॥ नष्टद्रा वलिदानेषु, यूजनादिषु सन्दर्भा ॥ नक्षत्रपठनं दत्ति, तामसा
लसाधकः ॥ १०६ ॥ श्रुत्यदानं यवका मि, मममकुलि सन्दर्भा ॥ यान्यनुमममकुलि, पुष्टिदानि सुधा
वनः ॥ १०७ ॥ श्रुत्यानाख्यं ममकु, मायदाद्रा नर्गनथा ॥ तिलामलितथा दत्ति, तथामृत्युं जययनं ॥

१०६॥ वल्लु न्वनं च भुज (ग) अर्द्ध नावी नट न्वनं ॥ नाना मसु यद वलि मम मकुलिया लिय ॥ १०७॥ स्ना
 नद्या नि सदा स दु स्रुता मा यं नानि च ॥ वामा वा न ग दा द वि ज हा रु ल म वा नू या न ॥ १०८॥ दक्षिण
 वा यथा (ग) न जे हा रु ल म वा नू या न ॥ वि (म) य न ध भु र (ग) मम मकुलिया लिय ॥ १०९॥ पू वः
 मा य न वि प्रि ना ॥ शु काल रु ल य दो ॥ नाना या य रु वा द वि म कु का म दू या वि थ ॥ ११०॥ यं यं म
 कुं ज य द वि वी न रु म द न मान सः ॥ नं नं रा वं स मा य रु लं न रु लं न नः ॥ १११॥ न व म
 कुलि द व लि मम मकुलिया लिय ॥ यानि यानि प्र सि द्या नि नानि नानि च ॥ ११२॥ यथा स
 यं कु वा द वि व द ग व ला वि की लि ता ॥ स्ना न द्या न म सि द्या थः ॥ यार् न य यो य द न ॥ ११३॥ यार् न य
 यो य ना द्या शु ता म्ना ना य न द न ॥ न थ त्व यि म या वा का ॥ य ज मा य व स नि (म) ॥ ११४॥ स श्रा

२३

माययतिरुयः शुक्तिवदनालजत ॥ अतस्तथापि मित्रिजं, (मयतीयाः स्वयानिवत ॥ ११० ॥ अ-
थतः संयुवकामि, वरुणीयनमं नृनो ॥ वरुमनीयदादवि, साधकादेवयाननः ॥ १११ ॥ नृकस्य
रुयंकुयात, यूजनादिकमवद ॥ सर्वदेवनमस्कारं निर्यंकुयाययतनः ॥ ११२ ॥ ऊयादिकं तु
नष्टेव, मयैमं नमनः ॥ गुभागृहीतमनुं तु, ऊयायजति साधकः ॥ ११३ ॥ दृष्ट्यायातनु
मादली, आलस्यात्तायिसूदवि ॥ सैकयायगृहीतस्य, कथंयतु कुरुवित ॥ ११४ ॥ दीनवीयेः
मवाप्राति मनुादिकवदानन ॥ ॥ आदिदायनासोथं विधनं नृनो सापिदे ॥ ११५ ॥ यथमंज
नननाम, जीवतुद्वितीयकी ॥ तृतीयताउतं वि, वरुथं वाधनं नथ ॥ ११६ ॥ यं वमं अलिधकं, वि
मलीकवनायधकी ॥ आयायनं सकमं तु, अरुमं नथीमं ॥ ११७ ॥ नवमं दीयनं नाम, (मयनंदः

मर्मस्मृतिं ॥ मनुना मातृका मध्या, दुष्टा नाजननं स्मृतिं ॥ १२५ ॥ मनुवक्ष्ये नित्यं पुनः
 वा नृविना कुमात ॥ यत्तु जीवनं केनाम ताउ नं भूतं न यत्र ॥ १२६ ॥ मनुवक्ष्ये नित्यं समां लि
 खं ताउ नथं दूयं नो रुसा ॥ यत्तु के वायुय मंती, ताउ नं नो मनुः स्मृतिं ॥ १२७ ॥ मनुं विलिख्य
 विधिना, यस्मै नः कत्रदी प्रजे ॥ तन्मनु कत्रदी रसात, रुन्यादु रं ए वाधनी ॥ १२८ ॥ स्वतन्त्रो को
 विधम न न यदो मनु भूमि कथा ॥ मनु कथं यत्तु मनु मलिषिं धि सै द्रय ॥ १२९ ॥ संचित्य मनः
 सामन्ती, क्षाति मनु निद रुग ॥ मनु मलजुयं कवि, विमली कत्रदी लिदी ॥ १३० ॥ न वं धा मा मि मनुः
 युक्, दंती क्षाति मनु मनु ॥ कृत्स्न दक न ऊर्ध्व न पु ल्य भू मना ॥ १३१ ॥ न त मनु विधि वतः
 दत दोषा यनं मनु ॥ मनु ना वा विष्णु मनु, न व्यं ली न यं ली न वं ॥ १३२ ॥ ना व मा या व मा था ग मना दी यः

नमश्च न जयमानस्यमनुस्य (मयं त्वयकागर्त ॥१३३॥ नमश्च न संस्तुताः सर्वमनुस्य (मयि
ना ॥ नमानकृत्वा जयमानस्य सदायवहितः प्रिय ॥१३४॥ निगुर्लनत्यनयत यन बुक्क नृका नोदिविः
वर्जित ॥ सोका नयन वद वि वदुध दधन वनन ॥१३५॥ यथासूर्यस्य विवेच इध दधनादिषु ॥ द
धन नु नथा वन वाधाल सर्वदलि धा ॥ एकमवयन बुक्क आति नृयमन कर ॥१३६॥ साकारयदि
जायत स्वकृया नुव नानन ॥ नृयदयन धरुत्वा दलि धा ददिर दन ॥१३७॥ रुग्णकारन वन बुक्क
लिग्णकारन स्व नृयन ॥ केविनु गुरु गजान लिग्णकारन नृयि धा ॥१३८॥ रुग्णकारन सवर्त विदुधा
क्रानिनः सदा ॥ कोजाति नृया सर्वत सर्वददुष जा मना ॥१३९॥ सागकि नृया विदुधा यनृयः निव
नृयवान् ॥ नाया रुग्ण नि को गच्छ कुरु या कुरुवा रुम ॥१४०॥ यनृयस्य लिग्णया दवि निवा रुमः

सनातनः। न लक्ष्मीविसे साध्य न ददव नानन ॥१४१॥ मकिः। निवध्य विरूपा मम संकतमरु
मी। रगक गुं वरुह (ग) निवालिनी युकी लिता ॥१४२॥ न जस्त श्रुतिभु र (ग) रगम (ध्रुव) के यन ।
आक नृप मतं गुहं मभादाता युकी लिता ॥१४३॥ रुलं नृपं वत उव नानासं सात्र कामना ॥ उर्व विः
ज्ञायथा मनु। मना नृपं वत वक्र विता ॥१४४॥ निरुदास विता द विता मय मम मनीषी ॥ ययका मादिक
द वि मना विन्वा कानथ न ॥१४५॥ नेदा वस्तु विरूपा मम मवा प्रयात ॥ य (ध्रुव) के द वता वान
इ (ध्रुव) के रुल म मनु ॥१४६॥ श्रुयूल मनीषी (म) देवि की लिता मा क मा प्रयात ॥ श्रुमिं क नु व स मया
यामयाय वि की लिता ॥१४७॥ सायू व विरूपा क ल्य वरु द्रा स युका सिता ॥ वूं मां वि शां धन नु सिता
वरु मया य यु का सिता ॥१४८॥ (ग) द्र या ध्य युय त न कथनी यान क स्य चित् ॥ (ग) द्र या (ग) द्र या पू न (ग) द्र या

२४

पुनर्गम्या

गम्या गम्या पुनः पुनः ॥ पुनर्गम्या जननी ज्ञान गतवत ॥ अन्तः ॥ भक्त्या स्वयं गुरु गे वदिः ॥ गो वाः
 स्वयं सुवा ॥ ११० ॥ एवमसाधका लोक रुतमायुर्नर्गसयः ॥ श्रोत्राभा समदवसित वावात्रा पितृ पिः
 य ॥ १११ ॥ दिवभग्नयनं कृत्वा नातो वव समावत ॥ नाना भक्ति सहा लायेथ कृत्वा निवसाधका ॥ १
 ११२ ॥ नमिष्य कालात गुरु गे रुतं प्राप्ता स्वमानवा ॥ श्रोत्राभुक्त विरागन विभवा नः प्रकीर्तिताः ॥
 ११३ ॥ केली विषय मोदवि श्रोत्राभवाः रुतप्रदः ॥ सर्वमाय प्रकथिता मानात कुवदवता ॥ ११४ ॥ वि
 श्वामरु विरागन दवता स्वकृतः कलो ॥ विषयात रुतदादवि साधकानां जितात्मना ॥ ११५ ॥ नदस्य
 गुरु दवसि यनमं गमयनं सदा ॥ सर्वमाया प्रकथिता कवया ॥ प्रयुक्त प्रथक ॥ ११६ ॥ सर्वस्व
 रुतमाया यस्मिन्कीर्तिता मया ॥ गम्या ॥ गम्या नशुक्ला दुक्कदुक्कत नाम कान्ता ॥ ११७ ॥ उरुनामा यः

गुरु (ग) सदा (ग) यद्यु कीलित ॥ यदि त्वं स माता क नानी रव नि निभ्य ता ॥ १५० ॥ मत्स मः यु व धा दः
 वि सो ध को य दि रु न न । अति मा या दि न दि नः न दा सा ध यि र्नु वि य ॥ १५१ ॥ म क थ्य सा ध को द वि श्र
 न्ना थ को य तां ज य त । श्रु ग मा वा न गुरु (ग) स द्वा दा (ग) य न स्मृ तः ॥ १५२ ॥ उ रु ना म्ना या द । व नि वि
 ग मा (ग) य नः क लो ॥ सा ध का मु क लो द वि मा या नि न्दा दि र्म यु ता ॥ १५३ ॥ श्रु जि नं दि या ला नू या थ
 य (ग) का नं व किं ता । श्रु र्द व दि न ता नि र्म त स्मा (ग) या वि (ग) म त ॥ १५४ ॥ मू य नि द्वा मा य यु ता य वि न
 ना य पु का ण य त ॥ उ र्द यं सा ध के थ थ न पु का थं क दा य नः ॥ १५५ ॥ यदि य द्दे व ना ना रु सा ध का पि प्र
 का ण य त ॥ सि दि ता नि मु न रु त न दा त थ पु का ण ना नू ॥ १५६ ॥ श्रु त मु (ग) य य द वि य दि त्वं म म व नू
 ता ॥ उ रु ना म्ना थ य मा ला क थि ना रु वि दू र्ज ता ॥ १५७ ॥ ना सा म रा वं गुरु (ग) मा तां गुरु व दा म्ना हं ॥

नाम

शुक्रवर्णमयिमाला उग्ररुद्रयज्ञ ॥१७७॥ महाशिवमयीमाला, महावक्त्राटिकीमाला, स्फाटिकाशुश्रूः
सावहु, नूडाकरुसनिर्मिता ॥१७८॥ नूडाकमाला सावहु, कमलैव रुद्रैव यो ॥ आसनामूलनामा यः
कथितानि शुभानने ॥१७९॥ सर्वोत्तमं वा सुवर्णं, मधुनैवा कं वलादिकं। यज्ञयज्ञाश्च सावहु, प्रतिमा शुभ
पूजयन् ॥१८०॥ कलत्रं च पुथिद्याश्च, सुखावाहदयसूक्तं च ॥ नाश्रुवन्निखित्वा च निखित्वा पूजय
न्निथ ॥१८१॥ दीयस्यैवातिशयं, मूलमकुलं पूजयन् ॥ सर्वं सर्वपूजात्, मूलमेव पूजयन् ॥१८२॥ वि
सर्जनात्कमलं मनसा चिन्तयेत् ॥ सर्वद्वाराणां वा सु, आडकं च कुलीनं ॥१८३॥ जलं वा तं कं कीनं
वा, रुद्रयज्ञकमलं वा वनं। मकारं च वमाला वहु, यज्ञमकारं च निथ ॥१८४॥ असावयं च भद्रं वि, मनसा
यज्ञमकारं च ॥ एवं च वा तं दवि समया वा वमूलं ॥१८५॥ सा निवाचयु संनारु, यथा तस्य युक्तं मनान्

23